पद ११

(राग: यमन - ताल: भजनी)

प्रभु यावे यावे मम सदनी। नयन भुकेले तुझ्या दर्शनी।।धु.।। मार्गावरती सडे शिंपुनी। रांगोळीनें वेल काढुनी। हार तोरणें दारी बांधुनी। तिष्ठत माळ घेऊनी।।१।। कोठे खट खुट भर भुर होता।

वाटे रे प्रभु आले आतां। निरखुनी पाहतां खग पशु दिसता। खंत तें जाचें मनी।।२।। मंजुळ वारा जुळझुळ वाहता। 'प्रभु प्रभु' निघे ध्वनी।।३।। सूर्य मावळुनी चंद्र उगवला। स्निग्ध प्रकाशे जग उजळला। हृदयाकाशी मन उजळावे। चंद्र-प्रभु प्रगटुनी।।४।। केली बहुपरी तुझी विनवणी। लोटशी का रे माझी मागणी। अंत पहासी किती आवळुनी सिद्ध जाई कळवळुनी।।५।।